❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 48, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 मई, 2025 से रविवार 1 जून, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज का सर्वोच्च शिक्षण संस्थान - गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

तीनों आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा सर्वसम्मति से गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय के कुलाधिपति मनोनीत

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने माननीय कुलाधिपति के रूप में सम्भाला पदभार

गुरुकुल कांगडी आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रतीक - सुदर्शन शर्मा, प्रधान, पंजाब सभा

स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को पूरा करेगा गुरुकुल कांगड़ी - धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

भारत सरकार के सहयोग का हम आभार व्यक्त करते हैं - देशबन्धु मदान, प्रधान हरि. सभा

अमर स्वतन्त्रता सेनानी, महान शिक्षाविद् स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगडी सम विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखंड) आर्य समाज की आन, बान और शान का प्रतीक है। जिसकी प्रायोजक संस्थाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। 22 अप्रैल 2025 को तीनों सभाओं के प्रधान महोदयों की बैठक में सर्वसम्मति से **श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी**, चेयरमैन जेबीएम ग्रुप, प्रधान अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, संरक्षक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, माननीय कुलाधिपति

के 150वें स्थापना वर्ष के ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष को विश्वविद्यालय का माननीय कुलाधिपति मनोनीत किया गया। आगामी 5 वर्षों के कार्यकाल के लिए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने सम विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति के रूप में 22 मई, 2025 को पदभार ग्रहण कर लिया। इस शुभ सूचना से पूरे आर्य जगत में अत्यंत हर्ष और उत्साह की लहर है। विश्वव्यापी आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं देश-विदेश के समस्त आर्यसंगठनों की ओर से माननीय कुलाधिपति श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आर्यसमाज के अन्तर्गत ही संचालित होगा गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार
भारत सरकार एवं शिक्षा मन्त्रालय का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार

माननीय शिक्षामन्त्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी से भेंट करके जताया आभार : कुलाधिपति नियुक्ति की दी सूचना

माननीय शिक्षा मन्त्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, हरियाणा सभा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान, श्री विनय आर्य, आचार्य ऋषिपाल, श्री रणदीप आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं प्रायोजक संस्थाओं के अन्य प्रतिनिधिगण।

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) :
आओ, करें पर्यावरण संरक्षण

-: नोट :-
बैनर आर्यसमाज की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं

2 से 5 जून तक आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक सार्वजनिक स्थानों पार्कों, सड़कों,

चौक-चौराहों, सोसायटियों में करें पर्यावरण शुद्धि यज्ञ एवं वृक्षारोपण

आप सबसे निवेदन है कि ★ आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाएं वहां के फोटो व्हाट्सअप नं. 6390075900 पर भेजें और सोशल मीडिया पर प्रसारित करें। ★ पर्यावरण शुद्धि यज्ञों की वीडियो रिकार्डिंग/आर्यसन्देश टीवी चैनल पर प्रसारित करवाने के लिए 9540944958 पर सम्पर्क करें ★ अपनी आर्य समाजों में यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्रों के दो तीन सैट, यज्ञ पुस्तकें, हवन सामग्री, समिधा का पर्याप्त स्टाक रखें ताकि यदि कोई महानुभाव अपने यहां यज्ञ करवाना चाहें तो वह आपसे सम्पर्क करके करवा सके। ★ पर्यावरण शुद्धि यज्ञ में उपस्थित जनसामान्य लोगों को यज्ञ के लाभ के पत्रक बांटे जा सकते हैं। पत्रक प्राप्त करने के लिए वैदिक प्रकाशन (9540040339) से सम्पर्क करें। ★ समाज के बाहर एक बोर्ड भी लगावें कि प्रत्येक अवसर पर यज्ञ करवाने की व्यवस्था है, सम्पर्क में पुरोहित जी का नाम व मो.नं. भी अवश्य लिखें। ★ यज्ञों में प्रचारक प्रकल्प आदि का सहयोग प्राप्त करने के लिए 9990232164 अथवा 9350183335 से सम्पर्क करें। ★ पर्यावरण शुद्धि यज्ञ हेतु बैनरके डिजाइन आर्यसमाज की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड किए जा सकते हैं।- *संयोजक*

देववाणी-संस्कृत

मन की दिव्य शक्ति

वेद-स्वाध्याय

वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

–ऋ 10।57।6

ऋषिः–**बन्धुः सुबन्ध्वादयः**।। देवता–**विश्वेदेवाः**।। छन्दः–**गायत्री**।।

शब्दार्थ–**सोम**= हे सोमेदव! **तनूषू**=अपने शरीरो में **मनः**= मन को , मनःशक्ति को **विभ्रतः**=धारण किये हुए **वयम्**=हम लोग **तव व्रते** = तुम्हारे व्रत में हैं–तुम्हारे व्रत का पालन करते हैं और **प्रजावन्तः** =प्रजासहित हम लोग **सचेमहि** =तुम्हारी सेवा करते रहें।

विनय– हे सोम! तुम्हारा दिया हुआ, तुम्हारी महाशक्ति का अंशभूत मन हमारे शरीरों में विद्यमान है। इस मन का–इस तुम्हारी अमूल्य देन का हमें गर्व है। इस मन के कारण ही हम मनुष्य हैं। इस मननशक्ति के कारण ही हम पशुओं से ऊँचे हुए हैं। तो क्या अपने शरीरो में मन–जैसी प्रबल शक्ति को धारण किये हुए भी हम लोग तुम्हारे व्रत में न रह सकेंगे? निःसन्देह तुम्हारे व्रत का पालन करना बड़ा कठिन है। तुमने जगत् में जो उन्नति के नियम बनाये हैं, ठीक उनके अनुसार चलना बड़ा दुःसाध्य है, परन्तु जहाँ तुमने ये कठिन नियम बनाये हैं वहाँ तुमने ही हममें मन की अतुल शक्ति भी दी है, अतः हमारा दृढ़ निश्चय है कि हम अपनी मनःशक्ति के प्रयोग द्वारा सदा तुम्हारे व्रत में ही रहेंगे– कभी इसको भी भङ्ग न करेंगे– कठिन–से–कठिन प्रलोभन व विपत्ति के समय में भी मनः शक्ति द्वारा व्रत में स्थिर रहेंगे।

परन्तु यह सब व्रत पालन किस लिए है? यह तुम्हारी सेवा के लिए है। यह तम्हारा दिया मन इसी काम के लिए है। हम चाहते हैं कि केवल यह हमारा मन ही नहीं, किन्तु हमारे मन की प्रजा भी तुम्हारी सेवा में ही काम आये। मनमें जो एक रचना–शक्ति है, उस द्वारा प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कुछ रचना कर जाए, कुछ निर्माण कर जाए। यह रचना ही मन की प्रजा है। यदि हम, हे सो! सर्वथा तुम्हारे व्रत में होंगे तो हमारी यह रचना (प्रजा) भी निःसन्देह तुम्हारी सेवा के लिए ही होगी– इसी में व्यय होगी। एवं, हम और हमारी प्रजा सदा तुम्हारी सेवा में रहें, तुम्हारी सेवा में ही अपना जीचन बिता दें। अब यही संङ्कल्प है, यही इच्छा है, यही प्रार्थना है।

–:साभार:–
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दक्षिण में हिन्दी भाषा के विरोध की समीक्षा

क्या कर्नाटक का भाषा विवाद देश की अखंडता पर हमला है?

कर्नाटक में कन्नड़ और हिंदी भाषा विवाद का एक और मामला जुड़ गया। इस बार बेंगलुरु स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की बैंक मैनेजर महिला का वीडियो वायरल होने के बाद बवाल मच गया है। वायरल वीडियो में बैंक मैनेजर स्थानीय कन्नड़ भाषा में बात करने से मना करती हुई नजर आई। इसके बाद बैंक ने ब्रांच मैनेजर पर कार्रवाई करते हुए उनका ट्रांसफर कर दिया है। इस मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का बयान भी सामने आया, जिसमें कहा गया कि ब्रांच मैनेजर का व्यवहार कड़ी निंदा के योग्य है। और स्थानीय भाषा का सम्मान करना, मतलब लोगों का सम्मान करना है। साथ ही एक धमकी या चेतावनी भरे लहजे में कहा कि इस प्रकार की घटनाएं दोबारा नहीं होनी चाहिए। स्थानीय कन्नड़ भाषा में ही बातचीत करने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में 453 से अधिक जीवित भाषाएँ बोली जाती हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। इतनी भाषाओं के बीच भाषा विवाद होना बड़ी बात नहीं है। लेकिन प्रश्न है, यदि बैंक मैनेजर महिला उर्दू या अंग्रेजी में बात करती, क्या कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया इसी अंदाज में मुखर होते जिस अंदाज में वो हिंदी के विरुद्ध मुखर हुए हैं?

देश भर में अंग्रेजी बोली जाती है, दक्षिण भारत के राज्य में अनेकों भाषा संगठन अपनी–अपनी भाषा के तथाकथित संरक्षक बने हुए हैं। क्या वे अंग्रेजी के विरुद्ध बोलते दिखाई दिए? आखिर उन्हें हिंदी से ही इतनी नफरत क्यों है?

हाल ही में एक वीडियो देखा जिसमें एक महिला जोमोटो के डिलीवरी बॉय से मराठी ना बोल पाने के कारण पैसे देने से इंकार करती हुई हिंदी के विरुद्ध बोल रही थी। शायद उसे नहीं पता होगा कि फरवरी महीने में एक बस कंडक्टर और छात्र–छात्रा के बीच कन्नड़ और मराठी भाषा को लेकर हुए झगड़े ने कर्नाटक और महाराष्ट्र के बीच बस सर्विस को बाधित कर दिया था। इससे पहले 14 सितंबर 2024 को आयोजित होने वाले हिंदी दिवस समारोह का कर्नाटक भर के कन्नड़ संगठनों ने विरोध किया था। आरोप लगाया कि केंद्र सरकार हिंदी दिवस मनाने के नाम पर गैर–हिंदी भाषी राज्यों पर हिंदी थोपने की कोशिश कर रही है।

देश की राजधानी दिल्ली में यहाँ लगभग भारत के हर कोने से लोग आपको मिल जाएंगे, किंतु कभी भाषा का विवाद शायद ही सुना हो! यानी राजधानी सब भाषाओं का सम्मान करती है, लेकिन इसके इतर दक्षिण भारत में जानबूझकर भाषा विवाद को जन्म देकर शब्दों की लकीर खीची जा रही है।

एक समय था जब देश में आजादी का आंदोलन और हिंदी की स्वीकार्यता दोनों कार्य समांतर चल रहे थे। उस समय अंग्रेजों और अंग्रेजी दोनों के समक्ष हिंदी एक औजार की तरह कार्य कर रही थी। यही कारण था कि बाद में हिंदी स्वतंत्र भारत की भाषिक अभिव्यक्ति बनी। इसके पीछे सिर्फ आर्य समाज नहीं, देशभर के प्रायः स्वतंत्रता सेनानी इस मत के साथ कार्य कर रहे थे कि देश के लोकतंत्र की भाषा हिंदी होगी।

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भी हिंदी को केंद्रीय स्तर पर राजभाषा का दर्जा दिया गया। हालांकि इसके साथ अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा मिला था, जिसके मूल में अंग्रेजी की विरासत और कुछ छिटपुट हिंदी विरोध था। मगर तब से और आज तक धरातल पर बहुत कुछ बदल चुका है। वर्ष 2001 और 2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निकले निष्कर्ष को देखें, तो हिंदी विरोध के गुब्बारे में सुई जमीनी स्तर से चुभाई जा रही है। इसलिए राजनीति में नकारात्मक भाषा मुद्दों को चुनने का ढर्रा अब बदल देना चाहिए। क्योंकि हिंदी बोलने वालों की जो जनसंख्या वर्ष 2001 में थी, उसमें 2011 तक अखिल भारतीय स्तर पर 25.19 फीसद की वृद्धि हुई , लेकिन यही विस्तार किसी पूर्ण राज्य के रूप में तमिलनाडु में सबसे ऊपर है, जो अब 107.62 फीसद है। आगे यह केरल में 96.80, गोवा में 95.40, गुजरात में 78.53 और कर्नाटक में 49.71 फीसद है। हिंदी–विस्तार का यही आंकड़ा उत्तर प्रदेश में 23.86 फीसद, बिहार में 33.08 और मध्यप्रदेश में 22.15 फीसद है।

दरअसल, ऐसा इसलिए हो रहा है कि आज अंतर्राज्यीय रोजगार, शिक्षा और मनोरंजन आदि की चाहत में लोगों ने हिंदी सीखी है या इन्ही कारणों से विस्थापन हुआ है। यदि हिंदी को थोपना होता, तो यह संविधान की मूल मंशा के अनुरूप आज देश की अनिवार्य राजभाषा होती, लेकिन यह सच्चाई किसी से नहीं छिपी है कि स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी सरकारी कामकाज की भाषा स्वाभाविक रूप से अंग्रेजी ही है। जाहिर है कि हिंदी अपनी जमीन से आगे बढ़ रही है, ऊपर से थोपी नहीं गई है। इस क्रम में हिंदी को लेकर कुछ बने–बनाए भ्रम से देश जितना जल्दी–निकल जाए, तो अच्छा होगा।

सर्वप्रथम तो यही कि 'हिंदी पट्टी' जैसी कोई चीज वास्तविक धरातल पर नहीं है। आज अगर इस भाषा को खोजा जाएगा, तो न तो वास्तव में कोई 'बिहारी भाषा' का अस्तित्व है और न ही 'हिंदी बेल्ट' का। वास्तव में इस पट्टी में हिंदी से अधिक प्यार पाने वाली दूसरी सैकड़ों भाषाएं हैं। आप सोशल मीडिया कंटेंट से समझ सकते हैं। अधिकांश रील राजस्थानी, पंजाबी, हरियाणवी, भोजपुरी, मैथिली या अन्य स्थानीय भाषाओं में मिलेगी जिनमें हिंदी–उर्दू का मिश्रण मिलेगा। सिवाय कुछ धार्मिक सीरियल छोड़ दें तो देवनागरी भाषा में शायद ही आपको रील दिखाई दे।

ये सभी किए गए एक अध्ययन में भी पाया गया है कि वर्ष 2023 में टीवी के दर्शक के रूप में भोजपुरी भाषी न सिर्फ अंग्रेजी, बांग्ला, उड़िया, मलयालम से कई गुना आगे हैं, बल्कि पंजाबी, तेलुगु, मराठी और तमिल के बराबर हैं। इसका संगीत, फिल्म उद्योग और डिजिटल मीडिया के माध्यम से लगातार आगे बढ़ रहा है। इसमें देश के सभी भाषा–भाषियों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

इस क्रम में हिंदी को लेकर कुछ बने–बनाए भ्रम से देश जितना जल्दी–जल्दी निकल जाए, तो अच्छा होगा। वास्तव में उत्तर भारत में हिंदी से अधिक प्यार पाने वाली दूसरी सैकड़ों भाषाएं हैं और ये सभी लोग हिंदी को उसी व्यावहारिकता के धरातल पर खड़ा होकर स्वीकार करते हैं, जैसे देश के दूसरे हिस्सों के लोग। गौरतलब है कि जिस कथित हिंदी– पट्टी को हिंदी का ज्ञाता समझ लिया जाता है, वहां हिंदी को अलग से सीखा जाता है।

– शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज : संस्था नहीं, एक युग-निर्माणकारी विचारधारा

**"आर्यसमाज न कोई संस्था,
ये तो है एक विचारधारा।
जिससे जीवन पावन बनता,
जिसने युगों को संवारा।।"**

आर्यसमाज को यदि केवल एक संस्था, एक संगठन या कोई संप्रदाय मान लिया जाए, तो यह उसकी महानता के साथ अन्याय होगा। आर्यसमाज न सीमित है, न संकीर्ण यह एक व्यापक, शाश्वत और वैज्ञानिक जीवन-दृष्टि है। इसका आधार वेद है, इसकी आत्मा सत्य है और इसका लक्ष्य है समस्त मानवता का कल्याण।

✳ **आर्यसमाज कोई संप्रदाय नहीं यह सर्वश्रेष्ठ विचारों की छाया है:-**

आर्यसमाज वह छाता (umbrella) है, जिसके नीचे सभी श्रेष्ठ और विवेक शील व्यक्ति एकत्र हो सकते हैं। यह उन सबका मंच है जो' अंधविश्वास से मुक्ति चाहते हैं, ' समाज में समानता और न्याय की स्थापना चाहते हैं, ' स्त्री-पुरुष समान अधिकारों की बात करते हैं, ' और धर्म को कर्म, ज्ञान और विवेक के साथ जीना चाहते हैं। यह किसी पंथ या सीमित अनुयायियों का समूह नहीं, यह तो उस ऋषि संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा है जिसने **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** का उद्घोष किया था।

✳ **विचारधारा का केंद्र: वैदिक ज्ञान, तर्क और वैज्ञानिकता:-**

आर्यसमाजियों को यह स्मरण रखना चाहिए कि वे किसी देवी-देवता-पूजन परंपरा के अनुयायी नहीं हैं। वे वेदों के अनुयायी हैं जहाँ ईश्वर निराकार है, सर्वव्यापक है, और बुद्धि से जानने योग्य है। यह विचारधारा 'तर्कसंगत है', 'विज्ञान-सम्मत है' और आचरण में शुद्धता की माँग करती है। इसलिए आर्यसमाजी जब पाखंड, जातिवाद, या कर्मकांड के दिखावे में उलझते हैं, तो वे अपने मूल दर्शन से दूर हो जाते हैं।

✳ **आर्यसमाज: क्रांतिकारियों की जन्मभूमि:-**

जो इसे केवल यज्ञ या प्रवचन तक सीमित मानते हैं, वे भूल रहे हैं कि यही आर्यसमाज है जिसने हमें' स्वामी श्रद्धानंद जैसा बलिदानी संन्यासी दिया,' पंडित लेखराम जैसे निर्भीक सत्यवक्ता दिए, ' महाशय राजपाल जैसे प्रकाशक दिए जिन्होंने कलम से रण किया,' गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे विद्वान और लाला लाजपत राय, हरदयाल एम.ए., भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल , लाला हंसराज जैसे लाखों स्वतंत्रता सेनानी, समाज-सुधारक, और शिक्षाविद्। आर्यसमाज संग्राम का नाम है भीतर भी और बाहर भी। यह स्वर से पहले समर्पण की माँग करता है।

✳ **आर्यसमाजी पहले आर्य बनें विचारों और व्यवहार से:-**

यदि कोई केवल नाम से आर्यसमाजी है, पर ' वह जातिवाद करता है, ' नारी को दोयम समझता है, ' समाज में असत्य, छल, या भ्रष्टाचार करता है, ' और धर्म को भी राजनैतिक या दिखावे का साधन बनाता है, तो वह आर्य नहीं, केवल वेशधारी है।

आर्य वह है ' जो सत्य से डरे नहीं, ' जो स्वाभिमान से जिए, ' जो समाज में सेवा करे, ' और वैदिक ज्ञान को कर्म में उतारे।

✳ **समय का आह्वान: आर्यसमाजियों को जागना होगा:-**

आज आवश्यकता है कि आर्यसमाज फिर से एक जन-आंदोलन बने ' शिक्षा में श्रेष्ठता का आदर्श हो, महिला-सशक्तिकरण में अग्रदूत हो, ' पर्यावरण, विज्ञान और राष्ट्र-निर्माण में अग्रणी हो,' और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की वैदिक विचारधारा का प्रतिनिधि बने। परंतु यह तभी संभव है जब आर्यसमाज स्वयं अपने भीतरी विवादों से मुक्त हो। आज कुछ

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा पुन: वैदिक धर्म की स्थापना का प्रयास

गतांक से आगे -

विचार करने की बात यह है कि 1 अरब 96 करोड़ वर्ष तक केवल एक ही वेद ज्ञान पर आधारित वैदिक धर्म ही पृथ्वी पर मौजूद सब मनुष्यों का धर्म था। धर्म यानि जीवन जीने का संविधान, धर्म यानि नियम, धर्म यानि कर्त्तव्य था। पर अब सबके नियम और कर्त्तव्य अलग-अलग हो गए थे। जब एक समय में एक ही स्थान पर अलग-अलग नियम होंगे तो उनके मानने वालों का एक साथ लंबे समय तक रहना कैसे संभव है। फलस्वरूप विवाद होने आरम्भ हुए। राजा का आचरण, प्रजा का आचरण अलग-अलग ग्रंथों के आधार पर चलने लगा। अपनी-अपनी विचारधारा के अनुसार राजसत्ताओं को स्थापित करने के लिए भीषण युद्ध हुए, इनको धर्म युद्ध कहा गया। विचारों के अलगाव का सिलसिला यहीं नहीं रूका। ईसाई धर्म में भी विचारधारा की भिन्नता के नाम पर प्रोटेस्टेंट, कैथोलिक, बैपटिस्ट, रोमन आदि ग्रुप बन गए। मुस्लिम मत भी शिया-सुन्नी और अन्य छोटे-छोटे फिरकों के रूप में अलग-अलग वर्ग बन गए और इनके भीतर भी अनेक छोटे-छोटे वर्गों में मुस्लिम समाज बंट गया। बौद्धों में भी हीनयान, महायान, जैनियों में भी श्वेतांबर, पीतांबर, नीलांबर, दिगम्बर आदि अनेक विभाग बनते गए। यहूदी मत में फेरीसेस, सैडोसिस, इसेनसिस। पारसियों में शहंशाही, कड़वी और फसली वर्ग बन गए।

महाभारत के पश्चात् जब नए-नए मतों का उदय हो रहा था तब भी अनेक शुद्ध वेद के ज्ञाता मौजूद थे और इस स्थिति को ठीक करना चाहते थे किन्तु अनेक कारणों से वे ऐसा न कर सके। किन्तु एक नाम ऐसा है जिन्हें इतिहास में हमेशा स्मरण किया जाएगा और उनका नाम था आदि गुरु शंकराचार्य। शंकराचार्य का जन्म ईसा पूर्व 508 में केरल में हुआ। शीघ्र ही उन्होंने वेद की प्रमाणिकता को समझकर बौद्ध धर्म की मान्यताओं का विरोध किया और पुन: भारत में वैदिक धर्म की नींव रखी किन्तु इन्हीं कारणों से बौद्ध अनुयायी इनको अपना घोर विरोधी मानने लगे। आदि गुरु शंकराचार्य ने अनेक शास्त्रार्थ किए किन्तु अत्यन्त अल्पायु मात्र 32 वर्ष की अवस्था में वे षड्यन्त्र का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हुए। एक बार पुन: उठती हुई वैदिक धर्म की पताका उठते-उठते शान्त ही हो गई और पुन: भारत अपने गौरवशाली अतीत को बीच में ही छोड़कर नियति के अनुसार अधोगति की ओर जाने लगा।

इसी प्रकार से कुछ और छोटी-छोटी विचारधाराएं भी छोटे-छोटे मतों को जन्म दे रही थी। इन सबके बीच एक ऐसी विचारधारा भी जन्म ले रही थी जो इनमें से किसी विचारधारा को मानने के लिए तैयार नहीं थी, जिन्हें नास्तिक कहा जाने लगा।

अगर वेदों को ही अपनी मूल आस्था को मानने वालों के सनातन वैदिक धर्म की बात करें, तो वे भी अनेक भागों में बंट चुके थे। जातियों में अलग और मतों के नाम पर अलग।

शैव संप्रदाय—इनके आराध्य शिव थे।

वैष्णव—इनके आराध्य विष्णु थे।

शाक्त—जो देवी को ही मानते थे।

स्मार्त—जो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं।

राम के भक्त, कृष्ण के भक्त, हनुमान के भक्त, ऐसे अनेक छोटे-छोटे सम्प्रदाय बन गए, रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, वैष्णव, बैरागी, दास, रामानंदी, निम्बार्क, माधव, राधा वल्लभ, सखी गौडिय।

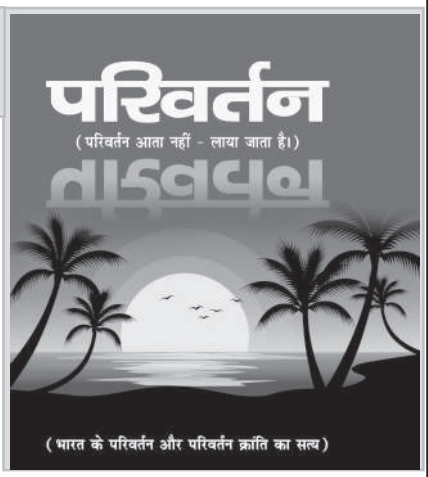

शैवों में भी—शैव पाशुपत, काल दमन और कापालिक। इनमें सभी में एक विशेषता और एकरूपता जरूर रही कि इन सभी में 'वेद' को ईश्वरीय ज्ञान के रूप में मान्यता अवश्य दी जाती है। यानी इन सभी मत-सम्प्रदायों में वेद की महान् और प्राचीनतम ग्रंथ के रूप में मान्यता है। कुल मिलाकर कहा जाए तो वेद के गलत अर्थों के प्रचलन आरंभ होते ही और शिक्षा व्यवस्था के आधार पर योग्यता आधारित वर्ण व्यवस्था के नष्ट होते ही पृथ्वी पर अलग ग्रंथों का, मानव रचित अतार्किक ग्रंथों का बोलबाला होता चला गया। इन्हीं ग्रन्थों के चलते अनेक मत संप्रदायों का उदय हुआ और वे सब एक-दूसरे के विपरीत होने के कारण आपस में दुश्मन बनते गए। इन्हीं के आधार पर देशों की सीमाएं निर्धारित होने लगी। यानि नए-नए देश बनने लगे। राजा अपने राज्य को मजबूत करने के लिए पादरियों/ मौलवियों का सहारा लेने को मजबूर होने लगे।

- क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

26 मई, 2025
से
1 जून, 2025

आर्य वीरांगना दल दिल्ली का चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर रघुमल आर्य कन्या स्कूल में सम्पन्न

सैकड़ों आर्य वीरांगनाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त कर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाने का लिया संकल्प

महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज की प्रेरणाओं के अनुसार नारी जाति के सम्मान और उत्थान के प्रति समर्पित आर्य समाज जहां एक ओर महिला सशक्तिकरण के लिए कृत संकल्पित होकर निरंतर प्रयासरत है, वहीं दूसरी ओर चरित्र निर्माण और आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाकर उन्हें शारीरिक, आत्मिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने का कार्य लगातार कर रहा है। इस श्रृंखला में आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा प्रशिक्षण शिविर 18 से 25 जून 2025 तक रघुमल आर्य कन्या उच्चतर मा. विद्यालय राजा बाजार, कनाट प्लेस के प्रांगण में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश का नियमित स्वाध्याय कर आत्मबल प्राप्त करें वीरांगनाएं - ठाकुर विक्रम सिंह

- निरन्तर पृष्ठ 7 पर

आत्मरक्षा करना वीरांगनाओं का प्रमुख अधिकार और कर्तव्य - आर्य रविदेव गुप्ता

आत्मरक्षा प्रशिक्षण की साप्ताहिक कक्षाओं आयोजन करेगा, आर्य वीरंगना दल - बृहस्पति आर्य

ओ३म्

आर्य समाज की पहल

सुशील राज

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

द्वारा

संघ लोक सेवा आयोग की

सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा

रजिस्ट्रेशन शुल्क 100 रुपए मात्र/-

प्रमुख सुविधाएं

- शिक्षण
- मार्गदर्शन
- रहना
- खाना

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें ।

वेबसाइट : www.pratibhavikas.org

आवेदन की अंतिम तिथि - 30 जून 2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

संबद्ध :

अखिल भारतीय दयानन्द
सेवाश्रम संघ (रजि०)

विशेष सहयोग :

NEEL FOUNDATION
A SOCIAL INITIATIVE OF JBM

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे–

मुसलमान–दुनिया के विचारों का प्रतिबिम्ब उस समय के भारतीय मुसलमानों के नेता सर सय्यद अहमद खां की राय में दिखाई दे सकता है। लाहौर के 'कोहेनूर' में आपने लिखा था– 'निहायत अफसोस की बात है कि महर्षि दयानन्द साहब ने, जो संस्कृत के बहुत बड़े आलम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे, 30वीं अक्टूबर 1883 को 7 बजे शाम के अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इलाम–ओ–फजल के निहायत नेक और दरवेशसिफ्त आदमी थे। इनके मुतअक्कद इनको देवता मानते थे, और बेशक वह इसी लायक ये। वह सिर्फ ज्योतिस्वरूप निरंकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे। हमसे और महर्षि दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी, वह हमेशा इनका निहायत अदब करते थे, क्योंकि ऐसे आलिम और उम्दा शख्स थे।

हर एक मजहब वाले को इनका अदब लाजिम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे, जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर एक शख्स को उनकी वफात का राम करना लाजिम है, कि ऐसा बेनजीर शख्स इनके दर्मियान से जाता रहा।' इस सम्मति को समझदार मुसलमानों की सम्मति का एक नमूना समझा जा सकता है।

अन्तिम दिनों में महर्षि जी का थियोसॉफिस्टों से बहुत मतभेद हो गया था, परन्तु मृत्यु पर थियोसॉफिकल सोसाइटी के नेताओं ने बड़ी सहृदयता से दु:ख का प्रकाश करते हुए आन्तरिक भक्ति का प्रमाण दिया। महर्षि जी की मृत्यु के समाचार पर थियोसॉफी के मुखपत्र 'थियोसॉफिस्ट' ने हृदय के उद्गार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये थे– 'एक महान् आत्मा भारतवर्ष से चल बसी। पं. दयानन्द सरस्वती जी, जिन्होंने आर्यावर्त में आर्यसमाज की बुनियाद रखी थी और इसके सबसे बड़े रुकन व मुखिया थे, आज दुनिया से कूच कर गए। वह निडर और सरगर्मी से काम करने वाला रिफॉर्मर, उसकी जबरदस्त आवाज और पुरजोश वक्तृत्वशक्ति से भारत के हजारों आदमी गत कई वर्षों के समय में प्रमाद और आलस्य के गढ़े से निकलकर देश–भक्ति के झण्डे तले आ गए थे, आज भारत को वियोग से दु:खी करके स्वर्ग को चला गया।'

थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्कॉट ने लिखा था– 'महर्षि जी महाराज नि:सन्देह एक महान् पुरुष और संस्कृत के बड़े विद्वान् थे। उनमें ऊंचे दर्जे की योग्यता, दृढ़ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मनुष्य जाति के मार्गदर्शक थे। वह अत्यन्त सुडौल, दीर्घाकार, अत्यन्त मधुर स्वभाव और हमारे साथ व्यवहार में दयाशील थे। हमारे दिमाग पर उन्होंने बड़ा गहरा असर छोड़ा है।'

ईसाई लोगों से महर्षि जी का बहुत खिचाव रहता था, क्योंकि ईसाइयत की विजय यात्रा को उत्तरीय भारत में रोकने वाला महर्षि दयानन्द ही था। मृत्यु पर ईसाइयों की ओर से भी हार्दिक दु:ख ही प्रकाशित किया गया। विलायत में समाचार पहुंचा। संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रों मैक्समूलर ने 'पालमाल गजट' में एक लेख लिखा। उस लेख में प्रोफेसर महोदय ने स्वीकार किया कि महर्षि जी वैदिक साहित्य के बड़े भारी पण्डित थे और प्रसिद्ध सुधारक थे। प्रोफेसर साहब ने लिखा कि जहां कहीं भी शास्त्रार्थ हुआ, महर्षि दयानन्द की विजय हुई। देश के सभी समाचार पत्रों ने महर्षि की मृत्यु को

देश का परम दुर्भाग्य बतलाया। इस प्रकार देशभर द्वारा कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किए हुए महर्षि दयानन्द ने दीवाली की रात को अभागी भारत–भूमि को छोड़कर परलोक की यात्रा की।

–**क्रमश:**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

The words of the author are simple and not artificial. These words show that the death of that ascetic had a deep impact on the hearts of the audience. It is said that Guru Dutt from Lahore also accompanied Lala Jeevandas ji to visit the sage. Pandit Guru Dutt ji was a semi-atheist before this. The shock of science shook the heart's faith in God.

Seeing the divine sight of the sage's death, Pandit ji's soft heart had a wonderful effect. Seeing the peace with which a believer can die, Guru Dutt's heart melted and the fragrant wind of faith and devotion started blowing where it was becoming empty due to atheism. The one who dies with an unbelieving heart sees disappointment in the future. For one who does not have faith in God, death is a bottomless darkness. The one who has only the pride of theism in life, at the time of death the veil is removed from his face and the one who appeared to be content in reality, actually appears to be restless. The time of death unfurls all the veils. At that time no emotion remains hidden. The death of the sage shows that his heart was full of faith in God and religious devotion. His life was bright, but death was brighter than that, it was divine. Such scenes are rarely seen on this earth. It was death that could bring the Saraswati of theism even in the desert of an atheistic heart.

At the time of life, the sage had friends as well as enemies_ but death removed all those differences. As soon as the news of death spread in the country, such a word of public sympathy was raised that minor disturbances automatically went away. Christians, Muslims, Brahmo, Theosophy - all in one voice expressed sorrow over the death of the leader of the Aryan race. The mouths which remained hesitantly silent while alive, became open and the leaders and newspapers of India considered Dayanand's untimely death as a sign of misfortune for the country. All sorts of pro-India gentlemen mourned the death of the sage. One can only imagine how much pain the Arya Samaj must have suffered. Everything of Aryasamaj was looted. Its foundation has been destroyed. Societies became orphans. It is difficult to imagine the orphan condition of the societies at that time. Now there are Arya Pratinidhi Sabhas, there are dozens of scholars, there are old trusted leaders and there is another great person sitting in the same place. At that time Arya Samaj and Arya Samajists had faith in one Dayanand. If there is a quarrel, he settles it, if there is a scripture, he reaches there, the festival should be adorned by him, the summary is that only he was the everything for the society. The widespread mourning that fell in the Arya Samaj, how the sensible Hindus outside the Arya Samaj experienced the separation of Swamiji, can be guided by the following lines from the long letter of 'Hindi Pradip' of Prayag, edited by Pandit Balakrishna Bhatt. 'Pradeep' had written after hearing the news of Swamiji's death - 'Ah Ha! Today the sun has set for India's promotion Kamalini. Ha! The Sadvaidya who removed the pain of the Vedas has disappeared. Ha Dayanand Saraswati! Why did you disappear without handing over the helm of the Saraswati ship of the Aryans to others? Ha! Sea of true kindness! Ha! Warriors of true joy! Where did you go after moistening the land of India saturated with your educational wave and sermon-like stream? Ha! Chaturanan for four days! Why did you spread your extraordinary cleverness in such a simple way in this barbarity-loving congregation? Similarly, in a long painstaking letter, Bhatt ji published that those people who were not members of Arya Samaj but loved Aryaism him the leader of Arya caste, not the propagator of narrow opinion.

The reflection of Muslim-world views can be seen in the opinion of Sir Syed Ahmad Khan, the leader of the Indian Muslims of that time.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला	**आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला**
(10 से 17 वर्ष के बच्चों हेतु)	**(10 से 17 वर्ष की बालिकाओं हेतु)**
5 से 12 जून, 2025	**11 से 17 जून, 2025**
स्थान सीमित (30 सीट)	**स्थान सीमित (35 सीट मात्र)**
अभिभावक स्पेशल शिविर	**अभिभावक स्पेशल शिविर**
9–10 जून, 2025	**15–16 जून, 2025**

दोनों संस्कार शिविरों में भाग लेने अथवा शिविर सम्बंधी अधिक जानकारी के के लिए **7428894033** पर सम्पर्क करें। – **सार्वदेशिक विश्वमार्यम ट्रस्ट**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का प्रशिक्षण शिविर ....

25 जून को सायं काल सामापन समारोह में ठाकुर विक्रम सिंह – संरक्षक, राष्ट्र निर्माण पार्टी- दिल्ली सभा के उप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा, केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्डा, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता, महामन्त्री श्री रविन्द्र आर्य, श्री हरिओम बंसल, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री हर्ष प्रिय आर्य, श्री बृहस्पति आर्य, महामंत्री आर्य वीर दल दिल्ली, डॉ. मुकेश आर्य श्री संजय कुमार, चेयरमेन, रघुमल विद्यालय, श्री अभिवन सहगल एवं अन्य आर्य समाजों के अधिकारियों सहित श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्री कनिका, श्रीमती ज्योति सहगल, श्रीमती लिपिका, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती विभा आर्या और अन्य अनेक आर्य समाजों की महिला अधिकारी कार्यकर्त्ता और सदस्य तथा अभिभावक गण उपस्थित रहे।

भव्य समापन समारोह

25 जून 2025 को सायंकाल इस 8 दिवसीय आर्य वीरांगना दल के शिविर का भव्य समापन समारोह अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। जिसमें सभी आर्य वीरांगनाओं ने संगीत की धुन पर बहुत ही सुंदर तरीके से अपने शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए सर्वाग सुंदर व्यायाम के विभिन्न अंग प्रस्तुत किए, सूर्य नमस्कार के 12 स्टेप एक साथ पूरी तन्मयता के साथ सामूहिक रूप से सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए। नियुद्धम, लाठी अभ्यास, योगासन और स्तूप रचना और लेजियम जैसे अदभुत व्यायाम अपने आप में अद्भुत और अनुपम सिद्ध हुए। अत्यधिक गर्मी होने के बावजूद सभी वीरांगनाओं का उत्साह, उमंग और उल्लास अपने आप में चरम पर था। इन 8 दिनों में जो कुछ भी उन्होंने अपनी शिक्षिकाओं से सीखा था उसे प्रस्तुत करने के लिए सभी अग्रसर थे।

महानुभावों के उदबोधन एवं आर्य वीरांगनाओं ने ली प्रतीज्ञा

समापन समारोह में जहां एक तरफ शारीरिक प्रशिक्षण के प्रदर्शन का कार्यक्रम चल रहा था, वहीं उपस्थित महानुभावों ने प्रेरक उदबोधनों के साथ आर्य वीरांगनाओं को शुभ कामना और आशीर्वाद देते हुए आयोजकों को बधाई दी। राष्ट्र निर्माण पार्टी के संरक्षक ठाकुर विक्रम सिंह जी ने अपने उदबोधन में आर्य वीरांगनाओं और शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आत्मरक्षा करने के लिए आत्मबल की आवश्यकता है, आपने यहां पर कठिन परिश्रम करके जो सीखा है उसको अपने अभ्यास में लाएं और सत्यार्थ प्रकाश को नियमित स्वाध्याय का अंग बनाएं, इससे आपको आत्मबल मिलेगा और जीवन सफल होगा। आपने सभी शिक्षिकाओं को सम्मानित किया तथा ब्र० राज सिंह आर्य जी को स्मरण करते हुए शंकराचार्य से शास्त्रार्थ एवं आर्य राष्ट्र के पुरोधा पुस्तक उपस्थित महानुभावों को भेंट की। इस क्रम में श्री रवि देव गुप्ता जी ने अपने उदबोधन में आर्य वीरांगनाओं को शुभकामनाएं दी और आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री बृहस्पति आर्य जी ने आगामी एवं गतिशील शिविरों की सूचना देते हुए कहा कि दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों में आर्य वीरांगना दल के साप्ताहिक कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा, इसके लिए सभी आर्य समाजें अपने यहां तैयारी करें और समाजों के अधिकारी सहयोगी बनें, आपने पहलगाम आंतकी हमले का जिक्र करते हुए कहा कि चार आदमी अगर 250 लोगों के बीच इतनी बड़ी घटना को अंजाम देते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि आत्मरक्षा कितनी आवश्यक है, इसके लिए ऐसे रचनात्मक शिविरों का और भी महत्व बढ़ जाता है, आपने उपस्थित आर्यजनों से सहयोग की अपील भी की तथा पुष्पांजलि इनक्लेव में चल रहे आर्य वीर दल के शिविर के समापन में सभी को आमंत्रित किया। संचालिका शारदा आर्या ने शिविरार्थी वीरांगनाओं को वैदिक धर्म प्रचार के साथ, शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति के साथ व्यायाम, प्राणायाम, सदग्रन्थों का स्वाध्याय व संध्या, देश सुरक्षा संबंधी प्रतिज्ञाएँ कराई। सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता संध्या बजाज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के नारी शक्ति पर अनंत उपकार बताए। सह संचालिका डां० लिपिका आर्या ने अपने वक्तव्य में संसार का उपकार करने के लिए वीरांगनाओं को सुसंगति में रहकर आर्य समाज से जुड़े रहने का आह्वान किया। मंत्री विभा आर्या ने शिविरार्थियों को वीरांगना बनने के गुण सिखाये। देश रक्षा हो या स्वास्थ्य सुविधाएं, महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे है। मोबाइल धोखाधड़ी, साइबर क्राइम से बचने की लघु नाटिका, प्राथमिक चिकित्सा व सुरक्षा संबंधी विचारों से भी शिविरार्थियों को जागरूक किया। इसके अतिरिक्त अनेक

- जारी पृष्ठ 8 पर

पृष्ठ 2 का शेष

क्या कर्नाटक का भाषा विवाद देश की अखंडता पर हमला .....

यहां दूर-दराज के क्षेत्रों में आज भी हिंदी उसी तरह है, जैसे बांग्ला, असमिया और गुजराती आदि हो सकती है। यहां तक कि हिंदी का प्रांतीय स्वरूप अपने आप में भिन्न है, जो हिदी के लोकतांत्रिक चरित्र का सबसे सुंदर उदाहरण है। दूसरी तरफ आज देश में हिंदी के नाम पर घोषित सरकारी-गैरसरकारी नौकरियों का अखिल भारतीयकरण तेजी से हुआ है। अब देश को जोड़ने, चलाने और जातीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए संवाहक भाषाओं की जरूरत हमेशा रहेगी और इसमें हिंदी सर्वाधिक उपयोगी है। हिंदी को लेकर दक्षिण भारत में जिस तरह का माहौल बनाया जा रहा है, वह देश के लिए शुभ नहीं है। हालाँकि दक्षिण भारत के अलग-अलग राज्यों के अपने भाषा टकराव हैं। तमिल, तेलुगु और मलयालम को बर्दाश्त नहीं करते। मलयालम, कन्नड़ को, मराठी, तेलुगु व अन्य भाषाओं के विरोधी हैं, यानी कोई भी स्थिर भारतीय भाषा नहीं है जो दक्षिण भारत के सभी राज्यों को आपस में जोड़ सके। इसके इतर देवनागरी को भाषाओं की माँ कहा जा सकता है, जो अपने साथ छोटी-बड़ी स्थानीय बोलियों से लेकर पंजाबी, भोजपुरी, हरियाणवी, उर्दू, अंग्रेजी समेत सभी भाषाओं को अपनी गोद में लेकर चलती है। एक किस्म से कहें तो देवनागरी हिंदी ने सभी भाषाओं को अपनाया है।

जबकि हिंदी के अतिरिक्त कोई ऐसी दूसरी भाषा देश में नहीं है जो एक सीमित क्षेत्र को तोड़कर सभी राज्यों की भाषाओं को अपना सके। किन्तु इसके बावजूद भी हिंदी को सबसे अधिक विरोध झेलना पड़ा है। हाँ, इसमें अच्छी बात ये है कि हिंदी का मूल विस्तार उन्हीं क्षेत्रों में अधिक हुआ है, जहां परंपरागत रूप से हिंदी का प्रभाव नहीं माना गया है और उनमें भी तमिलनाडु सबसे ऊपर है। गौरतलब है कि वहां हिंदी को थोपा नहीं गया है, हिंदी-विरोध तो वहां की राजनीति का केंद्रीय तत्त्व है। असल में, भारतीय लोक और लोकतंत्र को हिंदी में सबसे सहज ढंग से चरितार्थ किया जा सकता है। अंग्रेजी में न तो तमिलनाडु की आम जनता से संवाद संभव है और न ही कहीं और। भाषा एक सामाजिक परिसंपत्ति होती है, इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की बात सोचना भी मूर्खता है। दो अलग-अलग भाषाओं से दो व्यक्ति, दो समाज, दो कमरे बन सकते हैं, जबकि इनमें संवाद के लिए किसी एक भाषा की जरूरत होगी, दो बंद कमरों से निकलकर एक आंगन की जरूरत होगी। हिंदी इसी धरातल पर देश की सभी भाषाओं से सबसे आगे है और रहेगी भी। *- सम्पादक*

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

राष्ट्रीय शिविर

1 जून से 15 जून, 2025
स्थान : गुरुकुल विश्वभारती, भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)
उद्घाटन : 2 जून - सायं 5 बजे
समापन : 15 जून - सायं 4 बजे
सम्पर्क करें- ***सत्यवीर आर्य***
प्रधान संचालक, 9414789461

पृष्ठ 3 का शेष

आर्यसमाज : संस्था नहीं, एक युग-....

स्थानों पर आर्यसमाज की सभा-सभाएँ छोटे-छोटे मतभेदों, पदों की स्पर्धा, और व्यक्तिगत टकरावों में उलझ गई हैं। जिस विचारधारा ने युगों को जोड़ा, वह अपने ही लोगों के बीच बिखर रही है, यह दुर्भाग्य नहीं, चेतावनी है। आर्यसमाज को अब संकीर्ण विवादों से ऊपर उठकर, "संस्था नहीं, मिशन" के भाव से, एक जुट होकर पुन: उस शिखर पर पहुँचना होगा जहाँ से वह पूरे समाज को दिशा दे सके। भवनों से नहीं, भाव से आर्यसमाज उठेगा। पदों से नहीं, परम उद्देश्य से उसकी पहचान बनेगी। जब हर आर्यसमाजी अपने अहं को पीछे रख, वैदिक लक्ष्य को आगे रखेगा तभी आर्यसमाज फिर से एक पथप्रदर्शक शक्ति बन सकेगा। एकता ही शक्ति है, यही ऋषियों की वाणी है और यही युग की भी माँग है।

अंत में पुन: विचारणीय है कि आर्यसमाज को सीमित संगठन नहीं, वह अनंत चेतना की ज्योति है। जो आर्यसमाज को केवल भवनों, समितियों और चुनावों तक सीमित कर रहे हैं उन्हें अपने दृष्टिकोण को विस्तृत, व्यापक और क्रांतिकारी बनाना होगा। आर्यसमाज धर्म की नही, धर्म के मूल विचार की रक्षा करता है। यह मनुष्य को आर्य बनाता है श्रेष्ठ, सत्यवादी, और साहसी। आइए, फिर से उस मशाल को जलाएँ, जिसे दयानंद ने युगों के लिए जलाया था।

- कीर्ति शर्मा, उप प्रधान,
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

शोक समाचार

श्री ऋषिमित्र वानप्रस्थी जी का निधन

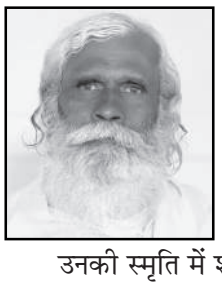

आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक के प्रधान श्री ऋषिमित्र वानप्रस्थी जी का दिनांक 22 मई, 2025 को अकस्मात निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार 23 मई, 2025 शुक्रवार को पूर्ण वैदिक रीति से उनके पैतृक गांव आदूर, ताल्लुक येलबर्गा, जिला-कोप्पल (कर्नाटक) में हुआ।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 25 मई, 2025 को आर्य वी.वी.पुरम् एवं सभा कार्यालय में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

⑧ साप्ताहिक **आर्य सन्देश**

सोमवार 26 मई, 2025 से रविवार 1 जून, 2025

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 29-30-31/05/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 28 मई, 2025

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य वीरांगना दल दिल्ली का चरित्र निर्माण ...

वक्ताओं ने आर्य वीरांगनाओं को प्रेरक उदबोधन दिये।

शिविर की सफलता में चेयरमेन श्री संजय सिंह जी, प्राचार्या किरण तलवार, आर्य वीर दल के महामंत्री बृहस्पति आर्य, अनुराधा, हर्ष आर्या, विजय रानी शर्मा, कौशल्या आर्या, अंजलि आर्या, और शिक्षिकाओं में सुश्री कोमल मंडल, कुसुम, राधा, काजल, पायल, हविषा का विशेष योगदान रहा।

शिविर उदघाटन समारोह 18 मई को ध्वजारोहण से हुआ। रीना ठुकराल, एस.डी.एम. इति अग्रवाल, शारदा आर्या द्वारा ध्वजारोहण राष्ट्रीय प्रार्थना से शुरू हुआ। दीप प्रज्वलन पूजा आर्या, माता कृष्णा ठुकराल जी, एस.डी.एम. इति अग्रवाल, मंजू शर्मा, संजय सिंह ने किया।

डॉ. उमा शशि दुर्गा की अध्यक्षता में आर्य वीरांगना दल शिविर का भव्य उदघाट्न समारोह हुआ। विदुषी दीप्ति आर्या ने शिविरार्थियों को जीवन में पढ़ाई के साथ आत्मिक, बौद्धिक बल होना अति आवश्यक बताया। शिविर को सफल बनाने के लिए रघुमल स्कूल के चेयरमेन, प्रधानाचार्या किरण तलवार सहित समस्त स्टाफ, शिक्षिकाओं तथा सभी सहयोगियों और वक्ताओं, अभिभावकों, शिविरार्थियों का सम्मान और आभार व्यक्त किया गया। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, व्यायाम प्रदर्शन, बौद्धिक, अनुशासन और सेवा साधना आदि में प्रतिभाशाली आर्य वीरांगनाओं को पुरस्कार से उपस्थित अधिकारियों ने सम्मानित किया। शिविरार्थी कनिष्ठ वर्ग में नेहा, वरिष्ठ वर्ग में खुशी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। शिक्षिकाओं को उपस्थित अधिकारियों ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। समापन समारोह का मंच संचालन श्रीमती विभा आर्या जी ने अत्यंत प्रेरणाप्रद तरीके से कुशलता पूर्वक किया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में यह रचनात्मक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

- शारदा आर्या, संचालिका

प्रतिष्ठा में,

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत	आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत
42वें वैचारिक क्रान्ति शिविर समापन समारोह वनवासी आर्य कार्यकर्ता संगम महोत्सव	**चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण समापन समारोह**
शनिवार 31 मई, 2025 सायं: 4:00	**रविवार 1 जून, 2025 सायं : 4:00 बजे**
डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर, जनपथ, नई दिल्ली	**डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुष्पांजलि एन्क. पीतमपुरा, दिल्ली**

दिल्ली के समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न वनवासी क्षेत्रों से पधारे आर्य कार्यकर्ताओं एवं आर्यवीरों का उत्साहवर्धन कर आशीर्वाद प्रदान करें।

सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान; जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री — अ. भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ; जीववर्धन शास्त्री, मु. शिविर संयोजक; धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

जगवीर आर्य, संचालक; बृहस्पति आर्य, महामन्त्री 9990232164; सुन्दर आर्य, कोषाध्यक्ष 9899008054; एस.के.शर्मा, मन्त्री — आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा; अजय सहगल, सचीव; रश्मि राज बिस्वाल, प्रिंसिपल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुष्पांजली एन्क्लेव, पीतमपुरा; बृजेश आर्य, अधिष्ठाता

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ **सत्यार्थ प्रकाश** सत्य के प्रचारार्थ

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group — Our milestones are touchstones

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह